Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

दलितों के प्रेरणा स्रोत महात्मा ज्योतिबा फुले

फातिमा बीवी आर
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग
कुसाट,केरल
8848394830

Itsmefathi2012@gmaillcom

शोध सारांश

भारत के परंपरागत समाज व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन करनेवाले सुधारकों में महात्मा फुले का स्थान सर्व प्रथम है। समाज के बहुसंख्यक जनता को शोषण मुक्त करके संपूर्ण मानव जाति में एकता का भाव भरना उनका लक्ष्य रहा। वर्ण व्यवस्था एवं जाति गत भेदभाव के शिकार होकर गुलामी कि बेड़ियों में फँसकर जी रहे दलित समाज को अधिकार दिलाने का कार्य करने वाले व्यक्ति थे फुले। इस आलेख के माध्यम से महात्मा ज्योतिबा फुले का जीवन और संघर्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास हुआ है। अंबेडकर के पूर्व ऐसे बहुत ही कम व्यक्तित्व को देखने को मिलता है जो दलितों की समस्याओं को समझने और समाधान ढूँढने का प्रयास किया हो। एक प्रकार भारतीय दलित आंदोलनों की व्यवस्थित शुरुआत फुले से मानना गलत नहीं होगा। उनका जीवन संघर्ष और कार्य ही इस आलेख का सारांश हैं।

बीज शब्द

महात्मा ज्योतिबा फुले , दलित , जाति व्यवस्था , अस्पृश्यता ,अधिकार, संघर्ष , सत्य शोधक समाज , स्त्री शिक्षा , दलितोद्धार, सामाजिक समानता,

प्रस्तावना

दलित आंदोलनों एवं आंदोलन कर्ताओं की चर्चा करने पर अंबेडकर के उपरांत महात्मा ज्योतिबा फुले का नाम उभरकर सामने आते हैं। क्योंकि दलित आंदोलन को नींव डालने में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने ब्राह्मणवाद के विरोध में खड़े रहकर जाति व्यवस्था , छुआछूत , वर्ण भेद , स्त्रियों की शिक्षा आदि अनेक सामाजिक मुद्दों पर अपना आवाज़ उढ़ायी। सबसे पहले दलितों केलिए एक आंदोलन के तौर पर संघर्ष सामने लाने में फुले का कर्म उल्लेखनीय है । देखा जाये तो आधुनिक दलित आंदोलन का इतिहास व्यवस्थित ढंग से उनसे शुरू होती है। साथ ही साथ उन्होंने भारतीय स्त्रियों की जिंदगी में शिक्षा की उजाला जलाने में महत्वपूर्ण कार्य किया। फुले ने उन सारे पुराने सड़ी गली मान्यताओं का विरोध करके सामाजिक समानता पर बल दिया और समाज कल्याण की कामना की।

जाति व्यवस्था एवं वर्ण गत भेदभाव के चंगुल में फंसे एक समाज के सामने मानव मुक्ति एवं समानता का सोच रखना बिलकुल सरल नहीं था। इस बात को समझकर सूझ बूझ से उन्होंने दलितों केलिए संघर्ष किया।फुले हमसे पूछते हैं कि "इस सूर्य मण्डल के साथ पृथ्वी का निर्माता यदि एक है , तो लोगों में दुश्मनी ,देशाभिमान तथा धर्माभिमान का व्यर्थ ही पागलपन क्यूँ ?"[1] इसी पागलपन को दूर करने केलिए उन्होने आजीवन उन्होने संघर्ष किया।

ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मण वाद,पुरोहित वाद और हिन्दू धर्म एवं शास्त्रों में निहित पुरानी रूढ़ियों के ऊपर खुलकर प्रहार किया। उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना करके उसके माध्यम से दलितों के हितों केलिए संघर्ष किया। स्वयं अंबेडकर फुले को अपना गुरु स्वीकार करते है। अंबेडकर के पूर्व भारत के परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ आंदोलन चलनेवालों में महात्मा फुले का नाम सबसे ज़्यादा उभरकर सामने आते है । उन्होंने भारतीय समाज को शोषण मुक्त कराके संपूर्ण समाज में मानवता और एकता को स्थापित करने का प्रयास किया ।भारतीय दलित समाज जिस वर्ण व्यवस्था के कारण शोषण का शिकार बन रहे थे , उसी व्यवस्था को खतम करना उनका लक्ष्य रहा। इसके लिए उनका मूलभूत दर्शन था समता- बंदुत्व – स्वतन्त्रता और शिक्षा। इसी दर्शन के सहारे उन्होंने सारे वर्चस्व वादी शक्तियों के खिलाफ आंदोलन चलाया।

उनका जन्म 11 अप्रैल सन 1827 ई को महाराष्ट्र के एक मिली जाती के परिवार में हुआ। दलित होने के कारण बचपन से लेकर उनको जाति भेद और भेदभाव का शिकार होना पड़ा। उन्होंने जो कुछ देखा , भोगा , समझा वही से उनको ऊर्जा प्राप्त हुआ और दलितों केलिए लड़ाई लड़ी। इसके लिए उन्होंने उन सारे धार्मिक संहिताओं और विचारों का विरोध किया जिससे मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव की दृष्टि पनप रही थी। इसके लिए उनका प्रथम प्रयास रहा सत्य शोधक समाज की स्थापना। इसके माध्यम से पहले उन्होंने महाराष्ट्र के अभिजात वर्ग और ब्राह्मण संस्कृति के रूढ विचारों के खिलाफ आवाज़ उठाई। धीरे-धीरे इसका अनुगूँज संपूर्ण भारत में सुनाई देने लगा।

जिस समय महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले दलितोद्धार और स्त्री शिक्षा केलिए काम कर रहे थे, उक्त समय में बंगाल में राजाराम मोहन राय ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। उक्त समय से लेकर संपूर्ण भारत में समाज सुधारकों की बाढ़ सी आ रही थी। अनेक संस्थाएं भी सामने आ रही थी। जैसे आर्य समाज , प्रार्थना समाज, परम हंस समाज आदि। लेकिन फूले द्वारा स्थापित सत्य शोधक समाज के सामने इन सारे संस्थाएं फीकी पड़ रही थी। इसका मुख्य कारण यही था कि इन सारे संस्थाएं जहां मात्र हिंदू धर्म का पुनरुद्धार पर ज़ोर दिया वहाँ फुले संपूर्ण समाज केलिए कार्य कर रहा था और भेदभाव विहीन समाज की कामना कर रहा था। बुद्ध से लेकर , सिद्ध, नाथ , कबीर तक आनेवाली समता और मानवतावाद की भावना को फुले आगे लेकर जा रही थी।

फुले इस बात को पहचानते थे कि वर्ण व्यवस्था के मूल में हिन्दू धर्म है। जब तक इसको मानने केलिए और उसके अंतर के विष को मिटाने केलिए हम तैयार नहीं होते तब तक समाज सुधार संभव नहीं है। इसलिए सत्य शोधक समाज के माध्यम से उन्होंने उन सारे रूढ़िगत तत्वों को मिटाने की और वर्चस्व वादी शक्तियों के सामने प्रतिरोध व्यक्त करने की कोशिश की। फुले दलितों का उद्धार हेतु सबसे ज़्यादा महत्व शिक्षा को दी। उनके अनुसार शिक्षा रूपी जागृति से ही दलितों की समस्या खत्म हो सकती है और उन्हें मुक्ति मिल सकती है। इसलिए यदि दलित समाज में सुधार लाना है तो दलितों को खुद शिक्षित होना पड़ेगा और संगठित रहना पड़ेगा। इसलिए उन्होंने शिक्षा को सबसे ज़्यादा स्थान दिया। उनके अनुसार,

"विद्या बिना मति गयी। मती बिना गति गयी।

गति बिना नीति गयी , नीति बिना संपत्ति गयी

संपत्ति बिना शूद्र ध्वस्त हुए ,

इतना सारा अनर्थ एक अविद्या से हुआ। "[2] ।

शिक्षा के माध्यम से अस्पृश्यता तथा वर्ण व्यवस्था आदि को जड़ से उखाड़ फेंकने केलिए उन्होंने 1848 में पूने में स्कूल खोल दी और अध्यापिका के तौर पर अपनी पत्नी को (सावित्री बाई)पढ़ा लिखाकर काबिल बनाया। "भारतीय नारी को शिक्षित कराके उसके लिए आत्मोन्नति के द्वार खोलकर उनकी छवि को उजागर करना,शूद्रों केलिए शिक्षा केन्द्रों को प्रस्थापना करके सामाजिक,आर्थिक और धार्मिक समानता लाने का प्रयास करना तथा उन्हें शिक्षित करके सामाजिक विषमता नष्ट करके समर्थ बनाने का जो कार्य महात्मा फुले ने किया है ,वह भारतीय इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाने वाला कार्य है"। [3] विभिन्न प्रकार की समस्याएँ एवं चुनौतियों का सामना करने के बावजूद भी वो अपनी मकसद से पीछे नहीं हठी तथा ज़्यादातर लोगों तक ज्ञान का प्रसार करने की कोशिश की।

फुले ने 24 सितंबर 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। सामाजिक दृष्टि से देखा जाय तो प्रस्तुत सामाजिक संस्था का उद्देश्य तत्कालीन अन्य संस्थाएं जैसे ब्रह्म समाज , प्रार्थना समाज आदि से भिन्न थे। इसलिए ये समाज अपनी दृष्टि और विचार के कारण एक आंदोलन का रूप धारण कर लिया। सत्य शोधक समाज के प्रमुख उद्देश्य निम्न लिखित थे।

"1 कोई भी ग्रंथ न तो ईश्वर प्रणीत है , न वह पूर्णरूपेण प्रमाण के रूप में उपलब्ध है।

2 मनुष्य जाती के गुण उसकी श्रेष्ठता प्रमाणित करते हैं।

3 परमेश्वर शारीरिक रंग रूप में अवतार धारण नहीं करता।

4 पुनर्जन्म , कर्मकांड , जप तप या धर्म गोष्ठियाँ ,अज्ञान मूलक हैं। सत्य शोधक समाज के सीधे – सादे उद्देश्यों से महाराष्ट्र के पिछड़े वर्गों – अछूत जातियों में व्यापक असर हुआ।

5 प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर भक्ति का अधिकार है। सर्व साक्षी परमेश्वर की प्रार्थना और चिंतन के लिए किसी मध्यस्थ की , किसी दलाल की आवश्यकता नहीं है।

6 ईश्वर एक है। वह सर्वव्यापी परमेश्वर की प्रार्थना और चिंतन के लिए की माध्यम की , किसी दलाल की आवश्यकता नहीं है।[4]

सत्य शोधक समाज में हर जाति के लोग प्रवेश पा सकते थे। इसके संस्थापकों में भी हर जाति जैसे मुस्लिम, ईसाई , फारसी , यहूदी , ब्राह्मण , चमार,महार आदि के लोग शामिल थे। उक्त संस्थान के माध्यम से पुरोहित वर्चस्व , बौद्धिक व आर्थिक शोषण , सामाजिक व सांस्कृतिक उत्पीड़न का विरोध प्रतीकात्मक रूप से जन आंदोलन बनकर सामने आ रहे थे।

धीरे-धीरे सत्य शोधक समाज के लोग सरल विधि से विवाह करने लगा। ज्योतिबा ने इसके लिए बहुत अधिक संघर्ष किया और पुरोहित रहित,दहेज रहित ,सीधे साधे विवाह कराके बाकी लोगों को इसके लिए प्रेरित किया। इसी तरह ज्योतिबा के कहने पर पूने के नाइयों ने हड़ताल पर चले गए और वे ब्राह्मण के बाल बनाने से इंकार कर दिया। अंत में ब्राह्मण लोग झुक गया और अपना हार मान लिया। बड़ी दरों में हजामत करना तय हुआ था।धीरे-धीरे सत्य शोधक समाज ब्राह्मण वर्चस्व वादी समाज के विरोध में एक क्रांतिकारी जन आंदोलन बनना शुरू किया। फुले इस बात से वाकिफ था कि तत्कालीन अन्य सुधारवादी संस्थाएं वैचारिक और सैद्धान्तिक दृष्टि से उच्च कोटि के थे। लेकिन सदियों से दबी , पीसी प्रताड़ित शोषित मानव जाति के कल्याण और सुधार हेतु उन संस्थाओं ने कुछ नहीं कर रही थी। फुले हमेशा जातीय एकता पर बल देते थे। वे दलित , शूद्र तथा अन्य पिछड़े जातियों में समन्वय स्थापित करना चाहते थे। वे संपूर्ण दलित समाज केलिए एक मंच चाहते थे। समय-समय पर उन्होंने अपने विचारों को लेखों , भाषणों , और रचनाओं के माध्यम से जनता के सामने लाया। उनकी रचनाओं के कई संग्रह मराठी, अंग्रेज़ी,हिन्दी आदि भाषाओं में मौजूद है। ज्ञान और विचारों के प्रसार केलिए उन्होंने अपना मित्र तुकराम का भी साथ लिया और मराती जाति व्यवस्था के विरुद्ध "जाति भेद विवेक सार" पुस्तक की रचना की। यह पुस्तक 1861 में छपी थी। आगे वह गुलाम गिरि ,ब्राह्मणाम्चे कसब , शिवजी – वा – पोवाड़ (1869), शोतक -यात्रा-आसूड (1869),इशारा (1885) आदि पुस्तक को प्रकाशित किया। सतसार नामक एक पत्रिका को भी उन्होंने प्रकाशित कराया।

निष्कर्ष

इस प्रकार देखा जाय तो "अस्पृश्यता देव निर्मित न होकर मानुषी निर्मित है कहनेवाले क्रांतिकारी विचारक महात्मा फुले सच्चे अर्थों में भारतीय क्रांति के जनक थे। दलितों के सांस्कृतिक सामाजिक

जागरण की मूल संवेदना को सचेत कर दलित साहित्यकारों को लेखनी में प्राण तत्व का संचार करनेवाले महात्मा फुले भारतीय दलितों केलिए नवयुग के प्रेषित थे"। [5] उनके कारण ही स्त्री शिक्षा , स्त्री जागरण , जातिभेद आदि के बारे में सृजन करने में लेखकों को प्रेरणा मिली। इसी कारण भारतीय दलितों के दिलों दिमाग में उनके नाम हमेशा अमर रहेगा इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं हैं।

संदर्भ

[1] डॉ चंद्रकुमार वरठे – दलित साहित्य आंदोलन , पृष्ठ संख्या 41 से उद्धृत
[2] ज्योतिबा फुले – बीसवीं सदी में दलित समाज {रमविलास भारती} पृष्ठ संख्या 42 से उद्धृत
[3] डॉ चंद्रकुमार वरठे – दलित साहित्य आंदोलन , पृष्ठ संख्या 41
[4] संदीप सिंह – भारत में दलित आंदोलन , पृष्ठ संख्या 90
[5] डॉ चंद्रकुमार वरठे – दलित साहित्य आंदोलन , पृष्ठ संख्या 41